# कारणो का कारण

हमारे पास जो भी चीजे है सबके कारण है, तो इसका मतलब हुवा सारी चीजों के एक्सीस्टैंस के पीछे कोई न कोई कारण है, वैज्ञानिको ने सारी चीजों के पीछे कोई न कोई कारण बताया है, वो कहते है सुबह शाम होती है, क्योकि पृथ्वी अपनी एक्सिस के ऊपर घूमती है, बारिश होती है क्योकि सूरज की गर्मी से पानी भाप बन कर ऊपर जाता है जो ठंडा होते निचे गिरता है, वैज्ञानिक कहते इंसान बंदरो से आया है, इंसान के पूर्वज बन्दर है, साइंटिस्ट कहते है सारी चीजों के पीछे कोई न कोई कारण होता है, तो सवाल यह है की अगर सारी चीजों के पीछे कोई न कोई कारण होता है तो जब वैज्ञानिको के पास कोई कारण न हो तब क्या ?.... तब वह चीज के पीछे का कारण परमात्मा है, हाँ यह बात सच है की हमारा भगवान हमसे बहोत दूर है, जब हमारे पास कोई कारण न हो तब हम परमात्मा का नाम लेते है, जब कोई बात हमारे दिमाग की पहोच के बहार हो तब हम कहते है की तो उनका कारण परमात्मा है, यह हमारे दिमाग का कठोरपन है, हम सीधे सीधे परमात्मा से जुड़ जाये तो बात बन सकती है, क्योकि हमारे पास जितने कारण होंगे उतने ही हम परमात्मा से दूर होंगे, क्योकि सच बात छुपी रह नहीं सकती , चाहे कोई कितनी ही कोशिश क्यों न करे ... कोई कितने ही कारण क्यों न खोजे पर सच यह है की ‘हमें’ भगवानने बनाया है.. हमारे खोजे हुवे कारण का कोई मूल्य नहीं, इन फैक्ट हमारे खोजे हुवे कारण से हम ही संतुष्ट नहीं हो सकते, क्या हम इस अस्तित्व की तरफ देखे तो क्या हमारे खोजे हुवे कारण से हमें संतुष्टि मिल सकती है, क्या आपको इस अस्तित्व में परमात्मा की जलक नहीं दिखती? पर अगर हमारी दौड़ कारणो के पीछे है तो हम उस कारणो के ‘कारन’ को नहीं देख सकते, क्योकि दिमाग कोई भी चीज देखेगा कारण ढूंढते रहेगा, विचारो का जाल बुनता रहेगा, विचार करने से सिर्फ विचार ही मिलते है, विचारो के जाल में फसे हुवे को शांति कैसे मिल सकती है, इसलिए हमें सरलता की और जाना होगा, परमात्मा की तरफ जाना होगा

जो सारे कारणो का कारण है, जो हमारे ऊपर है, वो इस सारे एक्सीस्टैंस का कारण परमात्मा है, कारण देके हम मालिक नहीं बन नहीं सकते, ऐसा करने से जीवन में कभी संतृप्ति मिल नहीं सकती, मन कभी शांत नहीं हो सकता, जो जीवन हमने परमात्मा ने दिया है, वह बहोत मूल्यवान है , जीवन अपने आपमें आनंद रूप है, और जो जीवन हमें कारणो से मिला है वो बहोत छोटा है, वो जीवन एक कारण जितना ही छोटा है, अगर हम सारे कारणो से बहार निकल सके तो जीवन की स्वीकृति की तरफ बढ़ेगा, हम आनंद की तरफ जायेंगे, हम परमात्मा की तरफ जायेंगे,

अगर कोई चीज की पीछे हमने कारण दिया है तो वो मन का विश्लेषण तो नहीं , सच में भगवान के प्रति श्रद्धा पूर्वक होना और कोई चीज के होने के पीछे हमें कोई कारण न मिले तो भगवान को कारण मान लेना यह दोनों बातें बिलकुल अलग है, तो क्या भगवान हमारे मन का विश्लेषण तो नहीं, अगर विश्लेषण है तो भगवान के प्रति कोई भाव नहीं हो सकता, फिर हम अपने आपको बन्दर में से हुवे एवोलुशन कारण माने या भगवान को माने कोई फरक नहीं पड़ता, परमात्मा कोई शब्द नहीं , परमात्मा कोई विश्लेषण नहीं, अगर ऐसी बात है तो परमात्मा को हम माने ही मत, क्योकि ऐसा करने से जो सच बात है उनके प्रति विमुख हो जाना है, जब कोई बुद्ध पुरुष परमात्मा का नाम लेता है तब हमे लगता है हम भी परमात्मा को मानते है, क्योंकि कारण ना मिलने से हमने जिसे कारणमाना है उसे ही हम परमात्मा समजेंगे, पर तब बुद्धा पुरुष का परमात्मा .. परमात्मा है, और हमारा परमात्मा एक विश्लेषण होगा, और अक्सर ऐसा होता है हम धोके में जीते है, और इसलिए जो जीवन आनंद रूप है वो दुखरूप बन जाता है, और यह दुःख एक संकेत है की कही पर तो चूक हो रही है, क्योंकि की दुःख जीवन का स्वभाव नहीं, जीवन सहज ही आनंद रूप है, दुःख बनाया हुवा है, दुःख पेदा करने से आता है, जब की आनंद के लिए कोई प्रयत्न करने की ज़रूरत नहीं, जैसे श्वास लेने के लिए हम कोई प्रयत्न नहीं करते, अगर हम अपने श्वास पर थोड़ा ध्यान लगाए तो आनंद की जलक मिल सकती है, बस यह आनंद रूप जलक को ही सीडी बना लेना है, यह एक एस्कलेटर है, सीडी अपने आप ऊपर लेके जाएगी, जहाँ हमें होना चाहिए,

**प्रश्न : आपने कहा कारण देकर हम मालिक नहीं बन सकते यह बात समज में ना आयी।**

क्योंकि कोई चीज़ के पीछे जो कारणदेता है वही मालिक कहलाता है, जब ऐपल के नीचे गिरने का कारणकिसने ढूँढा यह बात पूछी जाए तो इस कारणका मालिक का नाम आता है, न्यूटन का नाम आता है, यहा से बात अटक जाती है, ऐसा लगता है जैसे न्यूटन ग्रैविटी का मालिक है,

कारणदेने का एक ही मतलब है की जो कारणो का कारणहै उस बात को तोड़ा जाए, थोड़े कारणके मालिक हम भी बन जाए, इसलिए इंसान कोई ना कोई चीज़ के पीछे पड़ा रहता है, कोई चीज़ ढूँढने के पीछे इतनी बेचेनि क्यूँ? ऐपल नीचे गिरे तो उसे खा कर ऐपल के स्वाद का आनंद उठाना चाहिए, जीवन का आनदं उठाए गुटलिया क्यों गिने,

अगर ढूँढना ही है तो कारणो के कारणको ढूँढो जो एक दिन मिल ही जाएगा, सालों लग सकते है, जन्मो लग सकता है, और हो सकता है अभी इसी क्षण मिल जाए,

ग्रैविटी की शोध की बात आती है तो न्यूटन का नाम सिखाया जाता है, अगर सही में हम भगवान को मानते है तो हमें यह कहना चाहिए की ‘न्यूटन को ग्रैविटी का पता चला’, ग्रैविटी की शोध नहीं की है,

ग्रैविटी तो इस ब्रम्हाण्ड में मोजुद ही थी, पर हम पूरी बात नहीं सिखाते, क्योंकि भगवान ने ग्रैविटी बनायी उसका हमें पता चला.. ऐसे कई सारे रहस्य है इस ब्रम्हाण्ड में जो हमें पता नहीं, ऐसा कहने से न्यूटन साइड में रह जाता है, हम इस ब्रम्हाण्ड में बहोत छोटे मालूम  पड़ते,  हमारा ईगो  हर्ट हो जाता है,

शब्दों की बड़ी क़ीमत है… न्यूटनने ग्रैविटी की शोध की और न्यूटन को ग्रैविटी का पता चला, यह दोनो बातों में बहोत फ़र्क़ है,

Aasthit